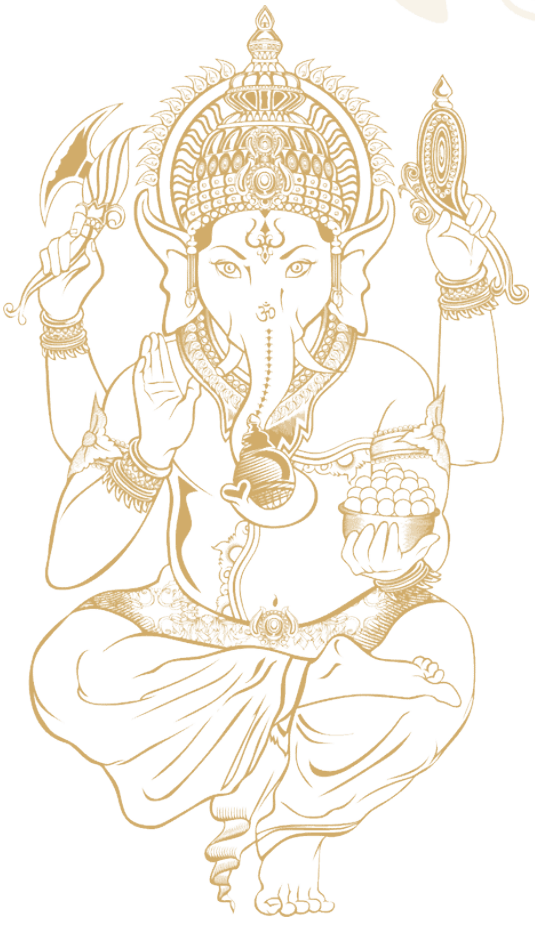

Yashpal

Kaushalya

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121508301

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121508301 Date: 07/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/05/2004	जन्म तिथि	25-26/03/2007
शुक्रवार	दिन	रवि-सोमवार
घंटे 21:15:00	जन्म समय	02:15:00 घंटे
घटी 38:22:45	जन्म समय(घटी)	49:11:37 घटी
India	देश	India
Sojat Road	स्थान	Sojat River
25:48:00 उत्तर	अक्षांश	25:53:00 उत्तर
73:49:00 पूर्व	रेखांश	73:45:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:34:44	स्थानिक संस्कार	-00:35:00 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:53:53	सूर्योदय	06:34:36
19:08:31	सूर्यास्त	18:48:06
23:54:52	चित्रपक्षीय अयनांश	23:57:33

वृश्चिक	लग्न	धनु
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
धनु	राशि	मिथुन
गुरु	राशि-स्वामी	बुध
मूल	नक्षत्र	आर्द्रा
केतु	नक्षत्र स्वामी	राहु
1	चरण	2
शिव	योग	सौभाग्य
बव	करण	बव
ये-येरुसलम	जन्म नामाक्षर	घ-घटी
वृष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
क्षत्रिय	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
श्वान	योनि	श्वान
राक्षस	गण	मनुष्य
आद्य	नाड़ी	आद्य
मृग	वर्ग	मार्जार

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 5वर्ष 7मा 6दि		21:34:35	वृश्चि	लग्न	धनु	21:02:22	राहु 10वर्ष 7मा 12दि	
शुक्र		23:29:36	मेष	सूर्य	मीन	10:51:47	गुरु	
13/12/2009		02:39:59	धनु	चंद्र	मिथु	12:08:09	05/11/2017	
13/12/2029		06:16:13	मिथु	मंगल	मक	27:13:26	05/11/2033	
शुक्र	13/04/2013	29:10:08	मीन	बुध	कुंभ	13:28:20	गुरु	24/12/2019
सूर्य	14/04/2014	15:00:36	सिंह	गुरु	वृश्चि	25:37:30	शनि	07/07/2022
चन्द्र	13/12/2015	00:18:01	मिथु	शुक्र	मेष	15:36:34	बुध	12/10/2024
मंगल	11/02/2017	15:33:18	मिथु	शनि व	कर्क	24:45:02	केतु	18/09/2025
राहु	12/02/2020	17:19:39	मेष व	राहु व	कुंभ	22:03:24	शुक्र	19/05/2028
गुरु	13/10/2022	17:19:39	तुला व	केतु व	सिंह	22:03:24	सूर्य	07/03/2029
शनि	13/12/2025	12:25:01	कुंभ	हर्ष	कुंभ	21:51:54	चन्द्र	07/07/2030
बुध	13/10/2028	21:27:09	मक	नेप	मक	27:07:43	मंगल	13/06/2031
केतु	13/12/2029	27:50:40	वृश्चि व	प्लूटो	धनु	04:59:51	राहु	05/11/2033

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:54:52 चित्रपक्षीय अयनांश 23:57:33

लग्न-चलित

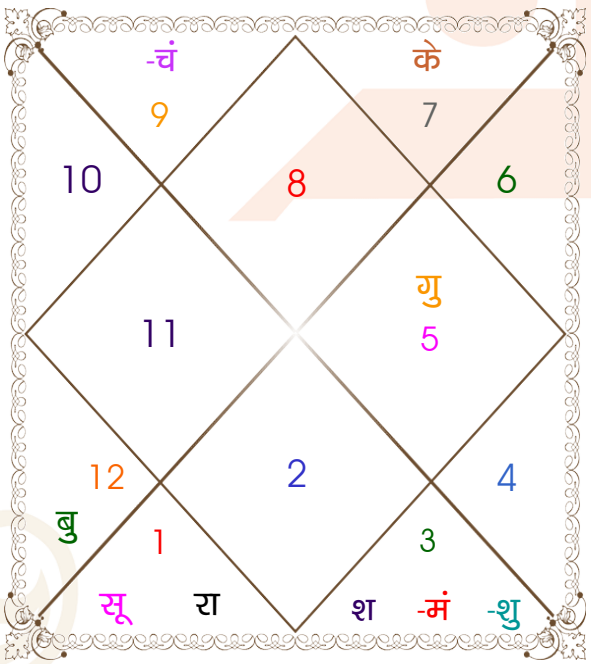

लग्न-चलित

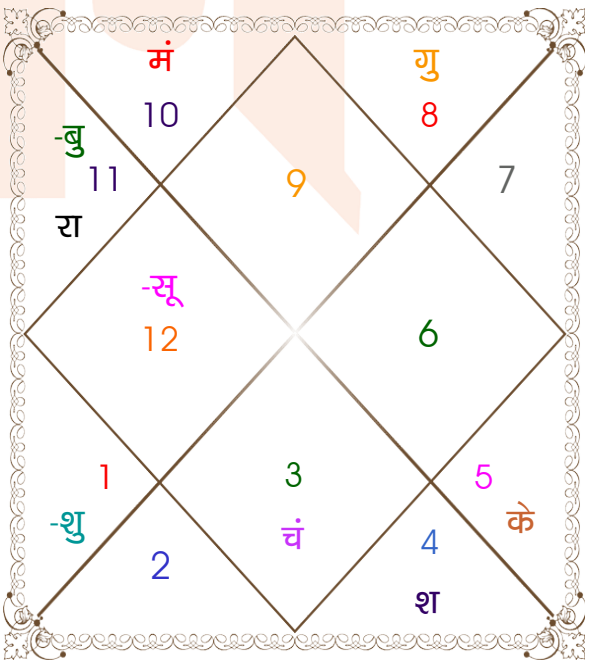

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	श्वान	श्वान	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	बुध	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	धनु	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	16.00		

कुल : **16 / 36**

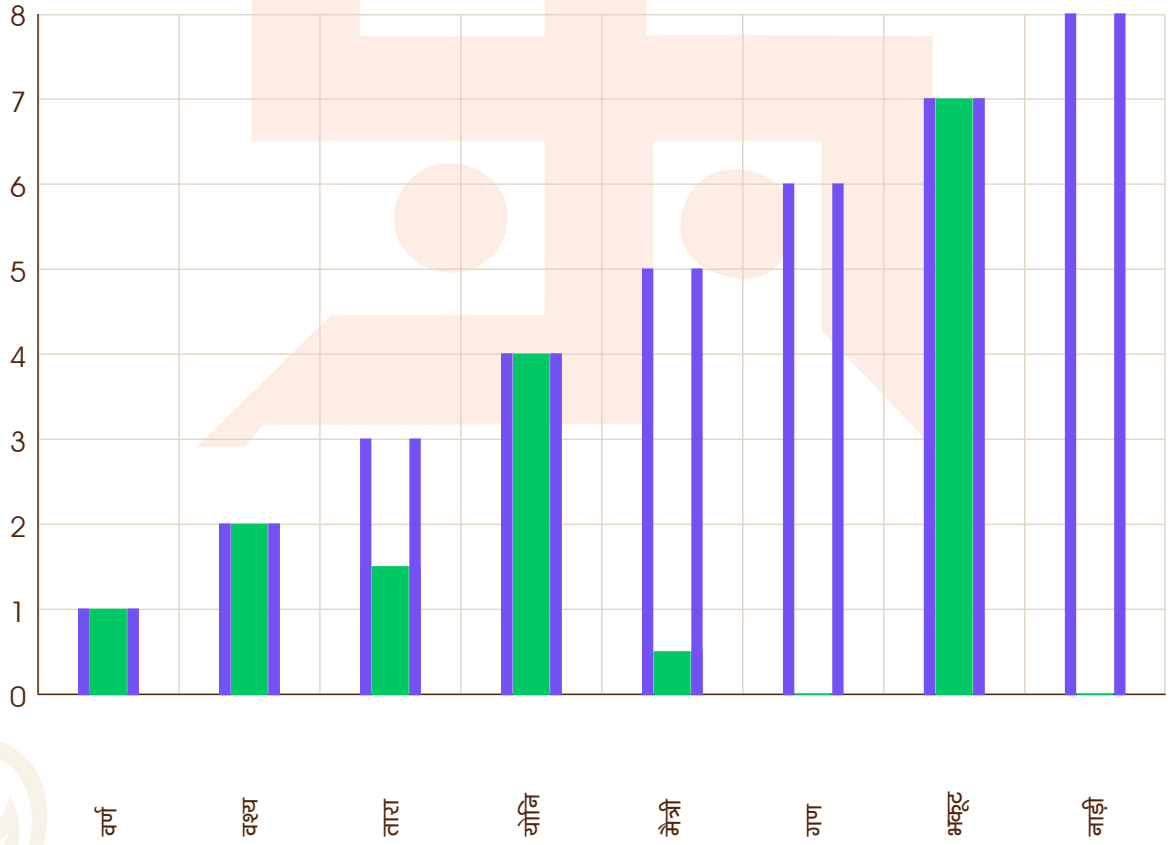

अष्टकूट मिलान

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Kaushalya का नक्षत्र आर्द्रा है।

लैचंस का वर्ग मृग है तथा Kaushalya का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार लैचंस और Kaushalya का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

लैचंस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

Kaushalya मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Kaushalya कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Kaushalya कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

लैचंस तथा Kaushalya में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

लैचंस का वर्ण क्षत्रिय तथा Kaushalya का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाव से Kaushalya वैश्विक मां की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा सभी की देखभाल तथा सेवा बिना थके, बिना शिकायत किये करती रहेगी। साथ ही परिवार के किसी भी सदस्य अथवा लैचंस से कभी तर्क-वितर्क नहीं करेगी। अपने इसी आतिथ्य भाव के कारण सभी की प्रशंसा का पात्र बनेगी।

वश्य

लैचंस का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं Kaushalya का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। लैचंस एवं Kaushalya दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

लैचंस की तारा प्रत्यरि तथा Kaushalya की तारा साधक है। लैचंस की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत लैचंस कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप Kaushalya को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

लैचंस की योनि श्वान है तथा Kaushalya की योनि भी श्वान है। अर्थात दोनों की योनि समान ही है। दोनों योनि के बीच परस्पर मित्रता का संबंध है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के बीच अगाध प्रेम होगा। दोनों हमेशा एक दूसरे को समय-समय पर अपना सहयोग देते रहेंगे जिससे इनका पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन अत्यंत सौहार्द्र एवं प्रेमपूर्वक बीतेगा। सोच एवं समझदारी में समानता होने के कारण परस्पर वैचारिक मतभेद नहीं रहेंगे। इस प्रकार आपसी विश्वास रहने के कारण आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। आप दोनों पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन में शांति का अनुभव करेंगे। मन में हर्षोल्लास की भावना बनी रहेगी। साथ ही परिवार में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। धन का आगमन समय-समय पर होता रहेगा। जिसके कारण आप सुखी पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन व्यतीत करेंगे। दोनों आपसी समझबूझ के साथ जीवन में आने वाली किसी भी समस्या का समधान

शीघ्र ही निकाल पाने में सझम होंगे। जिसके कारण इनका पारिवारिक जीवन अत्याधिक समृद्धिशाली रहेगा। इस प्रकार इनका वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन सुखी होगा एवं प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में लैचंस का राशि स्वामी Kaushalya के राशि स्वामी से शत्रु का संबंध रखता है। जबकि Kaushalya का राशि स्वामी लैचंस के राशि स्वामी के साथ सम रहता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए शत्रु किंतु दूसरा उसे सम मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

लैचंस का गण राक्षस है तथा Kaushalya का गण मनुष्य है। अर्थात Kaushalya का गण लैचंस के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान रहेगा। ज्योतिषीय दृष्टि से यह संबंध अधिक दिनों तक नहीं रहने वाला होगा। दोनों के वैचारिक मतभेद परिवार के सदस्यों के जीवन को अशांत बना सकते हैं। ऐसा विवाह त्याज्य है।

भकूट

लैचंस एवं Kaushalya की राशियां एक दूसरे से सम सप्तक (1/7) हैं। जिसके कारण इस मिलान को अति उत्तम मिलान माना जाता है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान अति शुभ है तथा लैचंस व Kaushalya को शांति, सुख, सौभाग्य, समृद्धि, योग्य संतान एवं चतुर्दिक विकास के अवसरसमय-समय पर मिलते रहेंगे। साथ ही दोनों के बीच असीम प्यार बना रहेगा तथा दोनों हर कार्य में एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे।

नाड़ी

लैचंस की नाड़ी आद्य है तथा Kaushalya की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। लैचंस एवं Kaushalya दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

मेलापक फलित

स्वभाव

लैचंस की राशि अग्नितत्व युक्त धनु तथा Kaushalya की राशि वायुतत्व युक्त मिथुन है। अग्नि तथा वायु में मित्रता के कारण लैचंस और Kaushalya की स्वभावगत विशेषताए समान होंगी फलतः संबंधों में मधुरता रहेगी तथा दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। अतः यह मिलान उत्तम रहेगा।

लैचंस की राशि का स्वामी गुरू तथा Kaushalya की राशि का स्वामी बुध परस्पर शत्रु एवं समराशियों में स्थित है। इसके प्रभाव से लैचंस और Kaushalya के मध्य संबंधों में विशेष मधुरता नहीं होगी तथा विरोध एवं वैमनस्य का भाव रहेगा। साथ ही एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे जिससे वैवाहिक जीवन में अनावश्यक समस्याएं होंगी। वे एक दूसरे के प्रति प्रेम सहयोग तथा समर्पण के भाव में भी न्यूनता रहेगी तथा सुख दुख में एक दूसरे का कम ही सहयोग करेंगे। अतः लैचंस और Kaushalya का वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा।

लैचंस और Kaushalya की राशियां परस्पर सप्तम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना गया है। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ प्रभावों में कमी आएगी तथा परस्पर स्नेह के भाव में वृद्धि होगी। वे एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करके गुणों की प्रशंसा करेंगे। अतः परस्पर प्रेम एवं सहानुभूति का भाव उत्पन्न होगा एवं समय समय पर एक दूसरे की सहायता तथा सहयोग करने में तत्पर रहेंगे। इससे इनका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा तथा प्रसन्नता पूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

लैचंस और Kaushalya दोनों का वश्य मानव है। अतः इनकी अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं समान रहेंगी। फलतः दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

लैचंस का वश्य क्षत्रिय तथा Kaushalya का वश्य शूद्र है। अतः लैचंस की प्रवृति साहसिक तथा पराक्रमी कार्यो को करने में रहेगी परन्तु Kaushalya किसी भी कार्य को परिश्रम तथा ईमानदारी से सम्पन्न करेंगी। अतः कार्य क्षेत्र की सुदृढ़ता बनी रहेगी।

धन

लैचंस और Kaushalya दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

लैचंस और Kaushalya दोनों ही आद्य नाड़ी में हुए है। यद्यपि सामान्य रूप से यह नाड़ी दोष बनता है जिससे इनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु इनका जन्म अलग अलग नक्षत्रों में हुआ है तथा इनकी राशि का स्वामी एक ही ग्रह है। अतः इससे नाड़ी दोष समाप्त हो जाता है परन्तु Kaushalya के स्वास्थ्य पर मंगल का दुष्प्रभाव होगा तथा साथ ही मासिक धर्म संबंधी अनियमिता से भी वे कष्ट की प्राप्ति करेंगी। अतः मंगल के इस दुष्प्रभाव को कम करने के लिए Kaushalya को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से लैचंस और Kaushalya का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त लैचंस और Kaushalya के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Kaushalya के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Kaushalya को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Kaushalya को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से लैचंस और Kaushalya सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार लैचंस और Kaushalya का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Kaushalya के सास के साथ संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। साथ ही आयु में पर्याप्त अन्तर होने के कारण इन के मध्य अनावश्यक मतभेद रहेंगे। लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता से व्यवहार करेंगे तो संबधों में मधुरता की वृद्धि होगी तथा तनाव में न्यूनता आएगी।

ससुर से भी Kaushalya को इच्छित स्नेह तथा सहानुभूति अल्प मात्रा में ही प्राप्त

होगी। अतः Kaushalya को चाहिए कि ससुर की सेवा, सुख सुविधा तथा आराम का पूर्ण ध्यान रखें। इससे उनसे स्नेह के भाव में वृद्धि हो सकती है। लेकिन देवर तथा ननदों के साथ Kaushalya के संबध अच्छे रहेंगे तथा परस्पर सार्थक सामंजस्य का भाव रहेगा तथा मित्रता पूर्ण व्यवहार करके उनसे स्नेह तथा सहानुभूति को प्राप्त करेंगी। इन संबधों से Kaushalya सास ससुर से भी इच्छित स्नेह की प्राप्ति करने में समर्थ हो सकती है इस प्रकार ससुराल में इनका जीवन सामान्यतया सुखी ही रहेगा।

ससुराल-श्री

लैचंस तथा उनकी सास के संबधों में सामान्यतया मधुरता ही रहेगी। साथ ही आपस में किसी प्रकार के मतभेद या तनाव के भाव की न्यूनता रहेगी। वे अपनी सास के प्रति श्रद्धा तथा सम्मानजनक व्यवहार रखेंगे तथा उन्हें अपनी माता के समान ही आदर प्रदान करेंगे। साथ ही सपत्नीक वह समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में लैचंस के संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण दोनों के मध्य काफी वैचारिक विभिन्नता तथा अन्य मतभेद रहेंगे परन्तु यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन किया जाय तो इनमें न्यूनता आ सकती है। साथ ही साले एवं सालियों से लैचंस के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग, स्नेह तथा सहानुभूति प्राप्त होगी एवं परस्पर मित्रता का भाव रहेगा। इस प्रकार ससुराल के पक्ष का दृष्टिकोण लैचंस के प्रति उत्साहवर्द्धक नहीं रहेगा तथा सामंजस्य से ही इसमें अनुकूलता वनी रहेगी।